शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मधुबनी चित्रकला: लोक संस्कृति की कलात्मक अभिव्यक्ति

उज्ज्वल आलोक
भारतीय भाषा केंद्र,
जे. एन. यू., नई दिल्ली, भारत

शोध संक्षेप

लोक शब्द अत्यंत व्यापक एवं विस्तार लिए हुए है, जिसके अंतर्गत अनेक समाज समाहित होते हैं । समाज अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति विभिन्न कला माध्यमों से करता है। कलाकृतियाँ समाज से विमुख नहीं होतीं. वरन एक स्तर तक वह समाज का दर्पण होती हैं। लोक कलाएं तो विशेषकर लोक का आइना होती हैं। इसके माध्यम से हम किसी भी धरती-क्षेत्र, समुदाय या लोक के मन की गहराइयों में पहुंचकर संस्कारों की सुगंध पा सकते हैं। वहाँ की माटी की सोंधी-सोंधी महक महसूस कर सकते हैं। समाज लोक-परंपरा का वाहक होता है। वहाँ के लोक के विश्वास, रीति-रिवाज, जीवन-मूल्य, मान्यताएं और परंपरागत जीवन-पद्धति के साथ-साथ चारित्रिक विशेषताएँ, नैतिक मान्यताएँ और मूल्य तथा मूल सामाजिक संरचना में निहित वैचारिक संजीवनी समाहित होती है । इसलिए लोक कलाओं का अध्ययन हमें किसी लोक विशेष के मूल तक ले जाता है। हम उस संस्कृति का साक्षात्कार कर पाते हैं, जो लोक विशेष की गोद में पनपती, पलती और विकसित होती है। प्रस्तुत शोध पत्र में मधुबनी लोक कला में अभिव्यक्त लोक संस्कृति पर विचार किया गया है

भूमिका

लोक कला की एक अभिव्यक्ति मधुबनी चित्रकला अपने लोक संस्कारों और संस्कृति को अपनी कूचियों से खींच-खींच कर जीवित रखने में प्रयासरत है। यह कला बिहार राज्य के उत्तरी क्षेत्र तथा नेपाल राष्ट्र के तराई क्षेत्र 'विदेह' से संबद्ध है। इस क्षेत्र को मिथिला के नाम से भी जाना जाता है। अतः मधुबनी चित्रकला का एक नाम मिथिला चित्रकला भी है । मान्यता है कि मिथिला चित्रकला की शुरुआत वैदिक काल से हुई। 'एक जनश्रुति के अनुसार राजा जनक ने अपनी पुत्री सीता के विवाह के मांगलिक अवसर पर ऋषियों की सहमति लेकर कलाकारों द्वारा स्वस्तिक अरिपन तथा कुछ लोक चित्रों को भूमि एवं भित्ति पर बनवाया था ।1 कालांतर में इन्हीं लोक चित्रों को यहाँ की औरतों द्वारा प्रत्येक सांस्कृतिक एवं धार्मिक अवसर पर बनाया जाने लगा। इस कथा से संबंधित एक और कथा प्रचलित है मिथिला क्षेत्र में निमि नामक एक राजा रहते थे, जिनके कुलगुरु ऋषि वशिष्ठ थे । एक बार राजा निमि को यज्ञ करने की इच्छा हुई। उन्होंने अपना विचार गुरु वशिष्ठ के समक्ष रखा, तब वशिष्ठ ऋषि ने कहा कि वे ब्रह्मलोक की यात्रा पर जा रहे हैं । यात्रा से लौटने के पश्चात् यज्ञ प्रारंभ करेंगे। किन्तु राजा का मन नहीं माना और उन्होंने किसी अन्य ब्राह्मण के द्वारा यज्ञ आरंभ करवा दिया.जब गुरु वशिष्ठ आए तो उन्होंने देखा कि यज्ञ प्रारंभ है । उन्हें अपना

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अपमान-सा लगा। उन्होंने क्रुद्ध हो कर राजा के प्राणांत होने का शाप दे दिया। राजा का प्राणांत हो गया। चारों ओर हाहाकार मच गया । जनता, ब्राह्मण सभी गुरु से विनती करने लगे और कहा कि राजा बिना राज्य कैसे चलेगा ? गुरु वशिष्ठ का क्रोध जब शांत हुआ तो उन्होंने उपाय स्व रूप राजा निमि के मृत शरीर को मथनी में रखकर मथवाना शुरू किया । मथने के उपरांत मानुष शरीर वाला एक व्यक्ति प्रकट हुआ । मथनी से निकलने के कारण उसे मिथि कहा गया और उसके राज्य को मिथिला।

इस घटना से सतर्क होकर ही राजा जनक ने सीता के विवाह के अवसर पर गुरु परामर्श से सम्पूर्ण विदेह क्षेत्र को मांगलिक चिह्नों से सजवाया। आज भी मधुबनी चित्रकला में इन मांगलिक चिह्नों का प्रयोग किया जाता है । हालाँकि संपूर्ण भारतीय परंपरा में मांगलिक प्रतीकों का प्रयोग होता है।

मधुबनी चित्रकला

मधुबनी चित्रकला में एक तरफ मांगलिक चिह्नों जैसे स्वस्तिक, कलश, मीन व देवी-देवताओं का चित्रण होता है वहीं दूसरी ओर प्राकृतिक चीजों में मांगलिक चिह्नों का आरोपण कर चित्रण भी होता है।

"स्वस्तिक' का मूल 'सु-अस' है. सु का अर्थ है- अच्छा, कल्याण अथवा मंगल. अस का अर्थ है- अस्तित्व अर्थात सत्ता. इस प्रकार स्वस्तिक का अर्थ है कल्याणकारी."2 संस्कृत में एक श्लोक है-

स्वस्ति न इंद्रो वृद्धश्रवाः
स्वस्ति न पूषा विश्ववेदाः
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु

अर्थात् 'महायशस्वी इंद्र हमारा कल्याण करें । विश्व का ज्ञान रखने वाला पूषा हमारे लिए कल्याणप्रद हो, जिसके पक्ष कभी नष्ट नहीं होते, ऐसा गरुड़ मंगल करे और बृहस्पति हमारे कल्याण को पुष्ट करें।' स्वस्तिक को विष्णु की चार भुजा भी कहते हैं । कुछ उसे रीद्धि-सिद्धि कहते हैं, जो गणेश से भी संबंधित हैं। हिन्दू धर्म में पूजन से पूर्व गणेश की स्तुति की जाती है । संभवतः इन्हीं को ध्यान में रखकर मधुबनी चित्रकला में इसे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। मांगलिक कलश के संदर्भ में यह माना जाता है कि 'इसमें समस्त देवता, सप्तसागर, सप्तदीप पृथ्वी चारों वेद गायत्री सावित्री सभी का निवास होता है ।3 इसलिए यह कलश सब पापों का शमन करने वाला व शांति का विस्तार करनेवाला है।

मीन (मत्स्य) को भारतीय संस्कृति में मांगलिक

रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है. मीन का संबंध एक ओर विष्णु के मत्स्य अवतार से है तो दूसरी ओर मिथिला के भौगोलिक स्थिति से भी जुड़ा है । मिथिला क्षेत्र में पड़ने वाला दरभंगा राज्य का मुख्य द्वार मीन द्वार ही है । द्वार के ऊपर मीन स्थित है । मिथिला विश्वविद्यालय के सामने भी उर्ध्वमुखी दो मीन स्थित है। लोक विश्वास यह है कि मीन का दर्शन करना शुभ होता है। सूफी कवि जायसी ने पद्मावत में राजा रत्नसेन की सिंहल यात्रा के समय शुभ वस्तुओं में मछली की भी गणना की है। ऐसे भी मिथिला क्षेत्र नदियों के जाल से बिछा हुआ है। यहाँ के गीतों में भी मिथिला का परिचय नदियों के साथ ही मिलता है।

गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिश पूर्व कौशिक धारा पश्चिम बहथि गंडकी उत्तर हिमवंत बल विस्तार।
कमला त्रियुगा, अमृता धेमुड़ा वागमती कृतसरा मध्य बहथि लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यागारा।
महाकवि चंदा ने इस क्षेत्र के संबंध में लिखा है-
नदीमात्रक क्षेत्र सुंदर शस्य से संपन्न,
समय सिर पर होय वर्षा, बहुत संचित अन्न।
दयायुत नर सकल सुंदर स्वच्छ सैम व्यवहार,
सकल विद्या उदधि मिथिला विदित भरि संसार।
जहाँ नदियां नहीं हैं वहाँ तालाब हैं, कुछ तालाब तो इतने बड़े हैं कि उन्हें सागर कहा जाता है । इसलिए यहाँ कि चित्रकला में ताल व ताल से संबंधित जीवों का चित्रण बहुत होता है । ये चित्र कहीं न कहीं मनुष्य को उस लोक जीवन से जोड़ने का प्रयास करता है, जो उसे पर्यावरण के अनुकूल बनाता है। Ralf Paddington ने लिखा है कि, 'The culture of a people may be defined as the sum total of the material and intellectual equipment whereby they satisfy their biological and social needs and adopt themselves of their environment.'4
मधुबनी चित्रकला में पर्यावरण के अलावा अन्य दृश्यों का भी चित्रण किया जाता है, जो उनके लोक जीवन में रच -बस गए हैं , जैसे रामायण, राधा-कृष्ण तथा विद्यापति व जयदेव के गीतों पर आधारित चित्र।
मिथिला की संस्कृति भी धार्मिक सम्प्रदायों एवं जातियों में विभक्त है। यहाँ कि चित्रकला पर भी इन सम्प्रदायों एवं जातियों का प्रभाव दिखाई देता है। धार्मिक सम्प्रदायों के आधार पर मधुबनी चित्रकला को तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है :

1 शैव संप्रदाय से संबंधित चित्रकला
2 शाक्त संप्रदाय से संबंधित चित्रकला
3 वैष्णव संप्रदाय से संबंधित चित्रकला

मिथिला में हिन्दू धर्म के प्रमुख तीनों संप्रदायों को मानने वाले लोग मिलते हैं। जो शैव संप्रदाय से संबंधित हैं उनके चित्रों में शिव से संबंधित चर-अचर का प्रदर्शन अधिक होता है। जैसे; नाग, डमरू, त्रिशूल, अर्द्ध चंद्र, व तीसरे नयन आदि , जबकि शक्ति को मानने वालों के चित्रकला में नौ देवी विशेषकर लक्ष्मी, काली, दुर्गा और पार्वती के मुख का तथा उनसे संबंधित चीजों का प्रदर्शन अधिक होता है । जैसे लक्ष्मी के लिए कमल व हाथी, दुर्गा के लिए बाघ आदि. वहीं वैष्णव संप्रदाय के लोगों में विष्णु के अवतारों को प्रदर्शित किया जाता है।
चूँकि यह क्षेत्र सीता के जन्मभूमि से संबंधित माना जाता है और यहाँ पर ही सीता राम का विवाह भी हुआ था । इसलिए यहाँ के चित्रों में सीता-राम से संबंधित कथाओं का चित्रलिपि में प्रदर्शन होता है । जयदेव के गीत गोविंद पर आधारित राधा-कृष्ण के रासलीला का प्रदर्शन भी होता है।
जहाँ हिन्दू धर्म है , वहाँ जातियां तो स्वाभाविक हैं। यहाँ चित्रों में भी जाति भेद रहा है । उपेन्द्र ठाकुर के अनुसार कोहबर लेखन का कार्य आरंभिक समय में कुलीन ब्राह्मण और कायस्थ जाति के लोग घर में हुआ करता था । कालांतर में सामाजिक बंधन ढीले हुए और अन्य जातियों ने भी कोहबर लेखन को अपने विवाह में शामिल कर लिया जाति के आधार पर ही कोहबर लेखन को ब्राह्मण स्टाइल और कायस्थ स्टाइल का नाम दिया जाता है।"5 दोनों ही स्टाइल में कुछ भेद हैं जिनमें से एक भेद कमल के पत्तों की संख्या भी है. कमल के पत्तों को पुरैन पात कहा

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जाता है. ब्राह्मण प्रारूप में पुरैन पात की संख्या नौ रहती है और कायस्थ प्रारूप में सात पुरैन पात दर्शाया जाता है।"6

इन सभी चित्रों का उद्देश्य है- ख़ुशी की कामना एवं ईश्वरीय अनुकंपा को प्राप्त करना. मधुबनी चित्रकला को इस उद्देश्य के आधार पर दो भागों में विभक्त किया जा सकता है-

1 अनुष्ठानिक चित्र लेखन

2 सौन्दर्यात्मक चित्र लेखन

अनुष्ठानिक चित्र लेखन में लोक के रीति-रिवाजों से जुड़े हुए चित्र होते हैं । जैसे मुंडन अरिपन, कोहबर लेखन, षष्टीपूजा का अरिपन, तुलसी पूजा अरिपन, तुसारी पूजा अरिपन, मधुश्रावणी अरिपन आदि. इन चित्रों का लेखन एक विशेष पद्धति को ध्यान में रखकर किया जाता है । जैसे चित्र के चारों ओर चौकोर घेरा होता है, घेरा दो रेखाओं से बना होता है, जिसके मध्य लता, मीन या पक्षी होते हैं । कुछ लोगों का मानना है कि यह तंत्र विद्या से संबंधित है । मिथिला के अनुष्ठानिक चित्रों में सबसे अधिक प्रचलित है- कोहबर लेखन।

कोहबर घर विवाह संस्कार का अंतिम रस्म है । जिसे हम हनीमून हाउस भी कह सकते हैं। मिथिला क्षेत्र में कोई ऐसा घर परिवार नहीं होगा जो विवाह के इस रस्म का निर्वाह नहीं करता हो और कोहबर लेखन न कराता हो. कोहबर घर के पूर्व या पश्चिमी दीवार पर एक विशेष प्रकार की चित्रकारी होती है , जिसकी चौड़ाई अधिक और लम्बाई अनुपातिक कम होती है । चौकोर बॉर्डर , जिसे मंडल कहते हैं , बना कर बीच में दुल्हा-दुल्हन की आकृति, बाँस, कमल, मीन, शिव पार्वती के साथ अन्य प्राकतिक चरों को अंकित किया जाता है। कोहबर लेखन को विषय-वस्तु के आधार पर दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम वर्ग में देवी-देवता, तथा वर-वधु का चित्र तथा द्वितीय वर्ग में लोक में दृश्यमान चित्रों का लेखन होता है । प्रथम वर्ग में चित्रित अंश कल्याण या ईश्वरीय अनुकंपा का प्रतीक है तो दूसरा वर्ग उत्पादकता या उर्वरकता को सूचित करता है। बाँस तथा कमल चक्र उत्पादन अंगों के प्रतीक के रूप में गृहित होता है। मोर, तोता जैसे पक्षी प्रेम का प्रतीक, कछुआ मिलन का प्रतीक मछली उर्वरता का प्रतीक होते हैं । लोक यह भी मानता है कि बाँस बहुत जल्दी बढ़ते हैं तथा इसका मूल जल्दी नष्ट नहीं होता है। इसे आधार मानकर नवदम्पति के सुखद वंश-वृद्धि की कामना की जाती है । इसीलिए इसका लेखन विवाहित स्त्री करती है । लोक गीतों को आधार बनाकर कहूँ तो वर के घर का कोहबर लेखन प्रायः वर की माँ द्वारा किया जाता है :

कोहबर लिखल कौशल्या रानी
बड़ रे जतन सं हे
चारू कात लिखू सासु आलरि झालरि
बिच में सोहाग लिखू..7

माँ नहीं हो तो भाभी या फिर पांच सुहागन स्त्रियों द्वारा किया जाता है।

सौन्दर्यात्मक चित्र लेखन का विषय-वस्तु किसी भी सीमा में नहीं बंधा होता है । सीता-राम स्वयंवर, शिव-पार्वती, कृष्ण-राधा रासलीला, आदि के साथ-साथ, ग्रामीण स्त्रियों की कार्यशैली, नृत्य करता मीन, युगल मोर तथा अन्य चित्र प्रमुख होते हैं।

निष्कर्ष

मिथिला का लोक अपने लोक चित्रकला के माध्यम से अपने सांस्कृतिक तत्वों, संस्कार आदि को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का प्रयास करती चली आ रही है । हालाँकि यह प्रयास स्त्रियों द्वारा अधिक हो रहा है । लोक संस्कृति लोक के कंठ में आसीन होकर या कूचियों में लिपटकर या फिर अपने रीतिरिवाजों के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होते आती है। लेकिन सच तो यह है कि मिथिला की जिन कूचियों में लिपटकर यह लोक चित्रकला युग-युगांतर से आ रही है , आज उस पर औद्योगिकीकरण एवं शहरीकरण के कारण विलोप होने का संकट मंडरा रहा है । हालाँकि संकट के इस दौर में कुछ देशी व कुछ विदेशी व्यक्ति इसके संरक्षण एवं संवर्धन का प्रयास बहुत ही लगन के साथ कर रहे है ,. जिसमें प्रमुख नाम पद्मश्री जगदम्बा देवी (1975), पद्मश्री सीतादेवी (1981), पद्मश्री गंगादेवी (1984) तथा पद्मश्री महासुंदरी देवी (2011) जापान के हासेगावा (जिन्होंने जापान में मिथिला चित्रकला का एक अद्भुत संग्रहालय बनवाया है) का नाम लिया जा सकता है । लोक चित्र में लोक की आत्मा बोलती है । वहाँ की संस्कृति बोलती है। मिथिला का लोक चित्र यहाँ की संस्कृति के प्राचीन भाव को उजागर करने वाली अद् भुत मिसाल है. जो आज भी यहाँ के गांवों में जगह-जगह देखने को मिलता है। परंपरा को जीवित रहने के लिए कई बार आधुनिकता का सहारा लेना पड़ता है । प्रायः उन परम्पराओं का नाश हो जाता है जो अपने में लचीलापन नहीं रखती हैं।.मधुबनी चित्रकला भी समय के साथ-साथ विकसित तरीकों को स्वीकार करते चलती है। वह अब भूमि और भित्तियों से उतरकर पेपर, कपड़ों, सजावट की वस्तुओं पर आने लगी हैं। भूमंडलीकरण के इस दौर में वह भी अपनी प्रतिभा लिए खडी है तथा अपनी लोक संस्कृति का प्रदर्शन विश्व भर में कर रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 प्रधान सं. गोरख नाथ, संपादक यशपाल सिंह रावत, संस्कृति, सितम्बर 2003, पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय, संस्कृति विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली. पृष्ठ सं. 63.

2 प्रधान सं. गोरख नाथ, संपादक यशपाल सिंह रावत, संस्कृति, अगस्त 2001, पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय, संस्कृति विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली. पृष्ठ सं. 56.

3 प्रधान सं. गोरख नाथ, संपादक यशपाल सिंह रावत, संस्कृति, अगस्त 2001, पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय, संस्कृति विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली. पृष्ठ सं. 57.

4 V. C. Bickley & P. J. Philip, Cultural Relative in the Global community- Problems and Prospective, Abhinav Pub. New Delhi. 1981, Page No. -209.

5 Upendra Thakur, Madhubani Painting, Abhinav Pub. New Delhi. 2003, Page No. 62

6 सं. गजेन्द्र ठाकुर, विदेह (मैथिली ई-पत्रिका) जनवरी 2009, www.videha.co.in page No. 97.

7 सं. कामेश्वरी देवी, संस्कार गीत, प्रकाशक मोहन भवनं नवानी, मधुबनी, बिहार. पृष्ठ सं. 125-126.